पाठ 16

हमारे गौरव–III

डॉ. विक्रम साराभाई :

डॉ. विक्रम साराभाई लगन और समर्पण के प्रतीक थे। उनकी बचपन से ही गणित और विज्ञान में विशेष रूचि थी। उन्होंने बह्माण्ड और सौरमंडल के कई जटिल प्रश्नों के प्रायोगिक हल निकाले थे। उन्होंने ऊर्जा के क्षेत्र में देश को नई दिशा प्रदान की तथा इसके शांतिपूर्ण उपयोग के लिए व्यापक प्रयास किए। उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र का गठन किया। उनके प्रयासों से आज भारत अपने देश में बनाए गए अनेक उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ चुका है। वे न केवल उच्च कोटि के वैज्ञानिक थे बल्कि उनकी रूचि कला, शिक्षा एवं समाज में भी थी।

चित्र 16.1 डॉ. विक्रम साराभाई

चर्चा कीजिए

- तुम अपने जीवन में ऐसा क्या करना चाहोगे, जिससे तुम्हारा परिवार और देश गौरवान्वित हो ?
- तुम्हारी रूचि किस विषय को पढ़ने में अधिक है ?
- ऊर्जा का उपयोग हम किन–किन कार्यों में करते हैं?

डॉ. होमी जहाँगीर भाभा :

बालक होमी को नींद बहुत कम आती थी। उनके माता–पिता परेशान रहते थे। चिकित्सकों को भी इसका कारण मालूम नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि ''आपके बच्चे के स्वास्थ्य में कोई खराबी नहीं है। दरअसल यह बालक इतना तीक्ष्ण बुद्धि का है कि विचारों का प्रवाह उसके मस्तिष्क में निरंतर जारी रहता है।'' इसके बाद माता–पिता ने उनका ध्यान विज्ञान की ओर आकर्षित किया। उनकी रूचि भौतिक शास्त्र में थी। किन्तु पिता चाहते थे कि बेटा इंजिनियरिंग करे। इसलिए आपने उच्च शिक्षा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से प्राप्त की।

चित्र 16.2 डॉ. होमी जहाँगीर भाभा

बाद में उन्होंने कॉस्मिक किरणों के भारी इलेक्ट्रोन कण 'मेसॉन' की खोज की। वे ''टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फण्डामेण्टल रिसर्च'' के प्रथम निदेशक रहे। उन्होंने अपने पूरे जीवनकाल में स्वदेशी साधनों के उपयोग पर ही जोर दिया। जिससे कि परमाणु विज्ञान के क्षेत्र में भारत को पूरी तरह आत्मनिर्भर बनाया जा सके। उन्होंने 'अप्सरा', 'सायरस', 'जेरलीना' नाम के तीन परमाणु रिएक्टर की स्थापना की। उन्होंने अणु शक्ति के शान्तिपूर्ण उपयोग पर बल दिया। उनके सम्मान में ट्राम्बे का नाम 'भाभा आणविक शोध केन्द्र' रखा गया है।

सोचिए और बताइए

- हमें स्वदेशी साधनों के उपयोग पर क्यों बल देना चाहिए?
- अणु शक्ति के शान्तिपूर्ण उपयोग से क्या अभिप्राय है?
- अच्छे काम करने वालों को सम्मान देने हेतु विद्यालय, संस्था, मार्ग आदि के नाम उनके नाम पर रखे जाते हैं। अपने आस–पास ऐसे दो उदाहरण ढूँढिए और बताइए कि वे कौन थे और उन्होंने क्या अच्छे कार्य किए थे?

जीजाबाई :

शिवाजी का नाम आप सभी जानते हैं। उनके व्यक्तित्व और तेजस्वी चरित्र को बनाने का श्रेय उनकी माता जीजा बाई को है। जीजा बाई बहुत ही बुद्धिमती, धर्मपरायण, दृढ संकल्प, धर्म की मर्यादाओं पर स्वाभिमान अनुभव करने वाली, तुलजा भवानी की भक्त नारी थी। शिवाजी के जन्म के समय वे शिवनेर किले में रहती थी और उसकी संतान वीर एवं स्वाभिमानी हो इसकी मंगल कामना करती थी।

चित्र 16.3 जीजा बाई

वे अपने पुत्र को तेजस्वी, गुणवान बनाने के लिए रामायण, महाभारत की कहानियाँ सुनाती थी। शिवाजी के हृदय में अपनी संस्कृति का स्वाभिमान जगाया। उसमें वीरोचित उत्साह बढ़ाया। कोण्डाला का किला जीतने में शिवाजी को प्रेरणा अपनी माता से ही प्राप्त हुई। बालक को देश भक्त बनाने की शिक्षा हमें माता जीजा बाई के जीवन से मिलती है। उन्होंने अपने पुत्र को हमेशा देश के सम्मान की रक्षार्थ बड़े से बड़े खतरे और चुनौती का सामना करने के लिए प्रोत्साहित किया। विपत्ति के समय शान्ति से विचार कर त्रुटिहीन योजना बनाने का गुण शिवाजी ने माता जीजाबाई से ही सीखा था।

सोचिए और बताइए

- आपके घर में आपको कौन कहानी सुनाते हैं? यदि किसी ने घर पर महापुरूष या वैज्ञानिक की कहानी सुनी है तो वह कहानी कक्षा में सबको सुनाइए।
- शिवाजी की प्रेरणा स्रोत उनकी माताजी थी। आपके जीवन के प्रेरणा स्रोत कौन है और क्यों ?
- आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं?
- इसके लिए आपको क्या–क्या करना होगा?
- जिस प्रकार जीजा बाई ने शिवाजी को योजना बनाना सिखाया। आप अपने शिक्षक की सहायता से अपनी पढ़ाई के लिए एक सप्ताह का टाइम टेबल बनाइए। टाइम टेबल भी योजना का एक रूप होता है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर :

डॉ. भीमराव अम्बेडकर बचपन से ही प्रतिभावान छात्र थे। उनका परिवार मूलतः नाग वंश से सम्बन्धित था। परंतु कालांतर से महार जाति के नाम से जाना जाने लगा। उनका पूरा जीवन संघर्ष की कहानी है। एक अछूत रूप से पहचाने जाने वाले परिवार में जन्म लेने के कारण बालक भीमराव को बचपन से ही अनेक लांछना और अपमान सहना पड़ा। इसलिए उनमें बचपन से ही अन्याय और सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध लड़ने की हिम्मत उत्पन्न हो गई थी। प्रारंभिक स्तर की शिक्षा विद्यालय से पूर्ण कर आगे की पढ़ाई हेतु वे बम्बई गए। वहाँ कमरा इतना छोटा था कि पिता–पुत्र दोनों एक साथ सो भी नहीं सकते थे। भीमराव दीपक की रोशनी में पढ़ाई करते थे। बड़ौदा रियासत से छात्रवृति मिलने पर वे अमेरीका पढ़ने गए। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया। आजादी के बाद उन्हें संविधान प्रारूप समिति का अध्यक्ष बनाया गया। उनकी अध्यक्षता में ही देश का संविधान निर्मित हुआ।

चित्र 16.4
डॉ भीमराव अम्बेडकर

सोचिए और बताइए

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन से आपने क्या शिक्षा ली ?
- क्या हमें अन्याय देखकर चुप रहना चाहिए?
- आप किसी के प्रति हो रहे अन्याय का विरोध किस प्रकार करेंगे?

पता कीजिए

- पुस्तकालय से डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जीवनी की पुस्तक में से उनके द्वारा चलाए गए किसी आंदोलन के बारे में लिखिए।

यह भी कीजिए

- आपके विद्यालय में किसी के प्रति यदि किसी भी आधार पर भेदभाव होता है तो अपने प्रधानाध्यापक जी को बताइए।

पंडित मदन मोहन मालवीय :

जिनके बारे में एनीबीसेन्ट ने बड़े भावपूर्ण शब्दों में कहा था– ''मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि विभिन्न मतों के मध्य केवल मालवीय जी महाराज ही भारतीय एकता की मूर्ति बने खड़े हैं।'' वे थे पंडित मदन मोहन मालवीय। वे जन्मजात कवि थे। उनका कवि नाम 'मकरंद' था।

चित्र 16.5 पंडित मदन मोहन मालवीय

उनके मन में एक ज्वाला जलती रहती थी कि एक ऐसी शिक्षा पद्धति और शिक्षा संस्थान भारत में स्थापित हो जहाँ भारतीय संस्कृति उचित सम्मान पाए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने एक संकल्प लिया कि वाराणसी में एक विश्व विद्यालय स्थापित करेंगे। उन्होंने कांग्रेस के 21 वें अधिवेशन में अपनी योजना बतायी। उन्होंने मकर सक्रांति के पावन दिन बनारस के तत्कालीन राजा से वह भूमि दान में प्राप्त कर ली। जहाँ आज बनारस हिंदू विश्व विद्यालय है। फिर क्या था, मालवीय जी ने दान इकट्ठा करना आरंभ कर दिया। वे जहाँ भी जाते, अपनी राष्ट्रीय शिक्षा की योजना लोगों के सामने रखते। वहाँ उनको अपार धनराशि मिलती। धीरे–धीरे उनकी झोली भरनी आरंभ हो गई। मालवीय जी हैदराबाद के मुस्लिम शासक निजाम के पास भी गए और वहाँ से उदारतापूर्वक दान प्राप्त किया। सारे देश का दौरा करके उन्होंने लगभग 64 लाख रूपये इकट्ठे किए। गांधी जी ने कहा था कि मांगने की कला तो मैंने अपने बड़े भाई मालवीय जी से सीखी है। वे उच्च कोटि के देशभक्त और संस्कृति में निष्ठा रखने वाले थे। वे वास्तव में क्रांतिकारी नेता सिद्ध हुए। उन्होंने भारत की आत्मा को जगा दिया।

उनका विचार था कि जब तक शिक्षा में राष्ट्रीयता का समावेश नहीं होगा हम गुलाम ही रहेंगे। यदि उनको ''राष्ट्र का शिक्षक'' कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

पता कीजिए और बताइए

- आपके गांव/शहर में कौन–कौनसे लोग है, जो सार्वजनिक कार्यों के लिए दिन–रात लगे रहते हैं और धन संग्रह भी करते हैं?
- मालवीय जी के कार्य में किस–किस ने सहयोग किया था?
- क्या आपके विद्यालय में विकास समिति बनी है? इसमें कौन–कौन लोग दान करते हैं?
- आपके विद्यालय की विकास समिति कौन–कौनसे कार्य करवाती है?

हमने सीखा

- डॉ. विक्रम साराभाई ने अंतरिक्ष में स्वदेशी उपग्रह भेजे थे।
- डॉ. होमी जहाँगीर भाभा ने परमाणु विज्ञान में भारत को आत्मनिर्भर बनाया।
- जीजा बाई ने शिवाजी को एक महान् योद्धा बनाया।
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर की अध्यक्षता में भारत का संविधान निर्मित किया गया।

जाना–समझा, अब बताइए

- मालवीय जी ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की, उसका नाम बताइए ? यह कहाँ स्थित है?
- हमारे संविधान के प्रारूप समिति का अध्यक्ष कौन थे?
- शिवाजी की माता का नाम क्या था ?

हमारे गौरव, हमारी शान
इन पर है हमें अभिमान